



धात्री

२०२३

जंगल की जानकार



द्वारा प्रकाशीत



धात्री
महिलाओं और बच्चों के लिए
एक संसाधन केंद्र

सितंबर, २०२३ हैदराबाद

झारखंड की आदिवासी महिलाओं को धन्यवाद
निर्मला केर्केट्टा, चतरा
मोनिका, चतरा

कहानी, चित्र और डिज़ाइन : डिंपल प्रकाश
हिन्दी अनुवाद : अपर्णा संजय

धात्री के बारे में

धात्री ट्रस्ट जेंडर और पर्यावरण न्याय से संबंधित मुद्दे पर काम करता है। हम आदिवासी समुदायों के साथ मिलकर भारत में ग्रामीण महिलाओं को उनकी सामूहिक आवाज़ को मजबूत करने के लिए और वनों और प्राकृतिक संसाधनों पर उनके अधिकारों के लिए काम करते हैं। हम बढ़ावा देते हैं, उनके पारंपरिक ज्ञान और प्रकृति के साथ सतत (सस्टेनेबल) तरीके से रहने की प्रथा को जो वर्तमान में उभरते जलवायु संकट की वैश्विक राजनीति को बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं।

इन कहानियों के माध्यम से हम ज़मीनी स्तर पर कार्यरत प्राकृतिक ज्ञान का उपयोग करने वाले अदृश्य चिकित्सकों को श्रद्धांजलि देते हैं।

झारखंड के चतरा जिले के अर्ध शुष्क पर्णपाती जंगलों के बीच स्थित सांगरी एक छोटा और शांत गाँव है ।

गाँव में घरों का निर्माण पारंपरिक शैली में किया गया है जिसमे घरों की छत फूस (पुआल) और दीवारें मिट्टी की ईंटों से बनाई गई हैं ।



निर्मला एक दयालु और सम्मानित महिला हैं। उनके जिंदगी के करीब आने वाला कोई भी व्यक्ति उनकी विनम्रता, शक्ति और गर्मजोशी से अछूता नहीं रहता है। उनका जीवन एक विशिष्ट कहानी है जिसे एक टेपेस्ट्री के रूप में समझा जाए, जिसमें उनकी सामाजिक सक्रियता, हकों की वकालत और प्रकृति से एक अटूट बंधन, एक साथ गूथे हुए हैं ।



जंगल की लय के साथ उनका गहरा रिश्ता है, उनका ज्ञान वास्तव में पारिस्थितिकी तंत्र की गहरी समझ को दर्शाता है। निर्मला की सामाजिक सक्रियता (जिसे हम एक्टिविज्म भी कहते हैं) जंगल में उनके पालन-पोषण के साथ गहराई से जुड़ी हुई है।



वनस्पतियों और जीवों का समृद्ध ज्ञान एक आशीर्वाद है जो उनके पूर्वजों द्वारा उन्हें मिला है। उनके पूर्वजों ने सौहार्दपूर्ण सह-अस्तित्व, वन भूमि को समझने, पालन-पोषण और सुरक्षा करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। यह ज्ञान निर्मला के जीवन और मूल्य प्रणाली की नींव बन गई और उन्हें व्यापक प्राकृतिक व्यवस्था में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को समझने में कारगर साबित हुआ।

वानिकी के बारे में इस पारंपरिक ज्ञान का सार उनकी जनजाति के दर्शन, सांस्कृतिक प्रथाओं और परंपराओं में गहराई से समाहित है, जिसकी अभिव्यक्ति उनकी लोककथाओं, त्योहारों, रीति-रिवाजों, गीतों, नृत्य, कला, शिल्प और जीवन शैली के माध्यम से होती है।



जंगल की समझ केवल प्रजातियों की पहचान और नामकरण से आगे बढ़ गई है। निर्मला ने पारिस्थितिकी तंत्र के नाजुक संतुलन को समझ लिया है, कि प्रत्येक मौजूदा पौधा और अन्य जीवित जंतु कैसे एक दूसरे के जिंदा रहने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

बस एक नज़र में पौधे के विकास को देखकर वह पौधे को सहारा देने वाली मिट्टी के स्वास्थ्य और गुणवत्ता का मूल्यांकन कर सकती है। वह अपने जंगल में उपस्थित वनस्पतियों और जीवों की प्रजातियों और औषधीय लाभों को अच्छे से जानती हैं। उन्हें जागरूकता है कि इनके कौन से भाग के उपयोग मददगार और कौन से नुकसानदेह साबित हो सकते हैं। इसके अलावा, उन्हें सतत उपयोग प्रथाएँ का ज्ञान भी है।

निर्मला की विशेषज्ञता सैद्धांतिक नहीं है, यह उनमें अनुभव से आती है। उदाहरण के लिए, वह आसानी से पक्षियों के पुकार की आवाज में अंतर और जानवरों के व्यवहार की व्याख्या कर सकती है इसके साथ ही साथ, उन्हें इस बात की भी समझ है कि पेड़ एक विशिष्ट आवास और पर्यावरण में ही क्यों पनपते हैं।

उदाहरण के लिए, सखुआ के पेड़ को लें; यह जड़ों के एक विस्तृत नेटवर्क को छुपाता है। ज़मीन के नीचे इसकी जड़ें इस तरह फैली हुई हैं कि यह नमी को संरक्षित कर सकता है और पानी को लंबे समय तक रोक कर रख सकता है। यह आस-पास के क्षेत्र को उपजाऊ बनाता है और वर्षा को आकर्षित करने की क्षमता भी रखता है। आदिवासी संस्कृति में यह एक महत्वपूर्ण पेड़ है और इसे पवित्र माना जाता है।

निर्मला की विशेषज्ञता का क्षेत्र जंगल के ज्ञान के अलावा हर्बल अध्ययन भी है। उनकी रुचि भोजन और हर्बल उपचार के माध्यम से प्रकृति की उपचार शक्तियों के उपयोग में भी है।



वह ऊर्जा बढ़ाने के लिए महुआ और रागी के लड्डू बनाती हैं ताकत, घावों और चोटों और जोड़ों के दर्द के इलाज के लिए महुए का तेल, और पाचन रोगों के उपचार के लिए उसका चूर्ण बनाती हैं। यह सूची चलती जाती है...



“

अगर आप ध्यान से देखेंगे तो पाएंगे कि हमारे समुदाय के बुजुर्गों में उतनी ही शक्ति और ऊर्जा है जितनी की तब उनके पास तब थी जब वे नवजवान थे।

आज भी मेरी मां/सास जिनकी उम्र 100 साल के करीब है, वे सुबह जल्दी 4 बजे उठ जाती हैं; हर दिन एक ही दिनचर्या का पालन करती हैं, सभी काम जैसे कि, सफाई, नहाना, धुलाई स्वयं ही करती है. बिल्कुल वही ऊर्जा, वह भले ही ठीक से बोलने में सक्षम न हो, लेकिन उसकी सुनने की शक्ति, उसके परिवेश की समझ और पर्यावरण और अन्य चीजें समझने की क्षमता अभी भी मजबूत हैं।

ऐसा इसलिए है, क्योंकि पुराने समय में हमारी जनजाति के लोग पूरी तरह से प्राकृतिक संसाधनों विशेषकर पवित्र महुआ के पेड़ पर निर्भर थे. महुआ के पेड़ों ने संकट के समय में, जब वे अपनी बुनियादी जरूरतों तक को पूरा नहीं कर पा रहे थे, तब उन्हें खाने के लिए भोजन प्रदान किया. समय के साथ, महुआ के पेड़ उनकी एकमात्र आजीविका बन गए. इसलिए, वे महुआ से बना भोजन खाकर बड़े हुए। उदाहरण के लिए, मांस, सब्जी और रोटियाँ पकाने के लिए महुआ तेल निकाला जाता था, खाना पकाने की प्रक्रिया में बीजों का उपयोग किया जाता था। विभिन्न प्रकार के व्यंजनों में महुआ मुख्य पदार्थ था. आजकल इसमें परिरक्षकों और रसायनों को मिलाया जाता है। ये ऐसे खाने के पदार्थ हैं जो शरीर के लिए बेहद हानिकारक होते हैं।

यह हमारी पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी के बीच शारीरिक स्वास्थ्य के मामले में सबसे बड़ा अंतर है.

”

हमारे साथ बातचीत में, उन्होंने बताया कि कैसे कुछ जंगली पौधों की प्रजातियाँ जो केवल जंगलों में उगाई जाती हैं, अपने अंदर महिलाओं की अच्छी सेहत का राज पालती हैं, जैसे कि, 'धावई'।



एक और पेड़, जिसे मुंडारी भाषा में 'पेशार' कहते हैं, वह अपने तने से लाल रंग का एक पदार्थ रिसता है. ऐसा माना जाता है कि इसमें मधुमेह को ठीक करने की ज़बरदस्त शक्ति होती है। यह शरीर में शर्करा के स्तर को नियंत्रित करता है।



‘पुर्नवा साग’ जैसी पत्तेदार सब्जियाँ पानी की धाराओं के पास उगती हैं। इस समुदाय की महिलाएं सुबह-सुबह पानी के निकायों के आस पास से ताजी साग की पत्तियां चुनने और इकट्ठा करने के लिए जाती हैं। साग के पत्तेदार भाग में शरीर में रक्त कोशिकाएं बढ़ाने और उन्हें सहारा देने की क्षमता बहुत होती है।

निर्मला के समूह की एक अन्य आदिवासी महिला अपना अनुभव साझा करती हैं –

“

इस साग से मेरी बेटी और भतीजी दोनों ठीक हो गए।

जब हमारी भतीजी को अपने रक्त समूह के अनुसार रक्त आधान की आवश्यकता पड़ी पर ना तो रक्त बैंक में उसकी उपलब्धता थी और न ही कोई रक्त देने को तैयार था। उस समय हमने उसे एक महीने तक हर दिन यह साग देने का फैसला किया।

डॉक्टर को आश्चर्य हुआ कि वह ठीक हो गईं। जिज्ञासा और आश्चर्य के साथ उसने पूछा, “तुमने उसे क्या खिलाया?” क्योंकि उसकी खून की मात्रा काफी बढ़ गयी थी।

”



दुनिया के एक छोटे से कोने में, निर्मला का योगदान स्मारकीय है। अपने अटूट समर्पण को लेकर वह अपने आदिवासी महिलाएं के समूह के द्वारा जागरूकता के बीज बोती हैं जो की अब वास्तविक परिवर्तन के रूप में सामने आ रहा है। निर्मला के प्रयासों का प्रभाव उनके गांव की सीमाओं से परे है। वह महिलाओं के लिए आदिवासी अधिकारों की वकालत करती हैं, वन अधिकार अधिनियम पर जागरूकता लाती हैं, और खनन और भूमि संबंधी चिंताओं पर प्रकाश डालती हैं; वह अपने समुदाय के लिए एक आवाज़ बन गई हैं। अपने प्रयासों से, निर्मला महिलाओं और बच्चों के बेहतर भविष्य की उम्मीद करती हैं। वह अपने समुदाय और खास कर के युवा पीढ़ी को अपना अर्जित ज्ञान, हर संभव तरीके से प्रदान करती रहती है।





धात्री

महिलाओं और बच्चों के लिए
एक संसाधन केंद्र

प्लॉट नंबर १०, लोटस पॉण्ड कॉलोनी,
मिलिटरी डाइरी फार्म रोड,
वर्ड नो। ७ सिकंदराबाद, वेदविहार,
त्रिमुल्धेरी, सिकंदराबाद,
तेलंगाना ५०००१५

© धात्री, २०२३

संपर्क करे

dhaatri@gmail.com
+ 91 40 29552404

सामाजिक मीडिया

इन्स्टाग्राम : [@dhaatriRC](https://www.instagram.com/@dhaatriRC)
ट्वीटर : [@DhaatriC](https://www.twitter.com/@DhaatriC)
फेसबुक : [fb.com/Dhaatricentre](https://www.facebook.com/fb.com/Dhaatricentre)

www.dhaatri.org